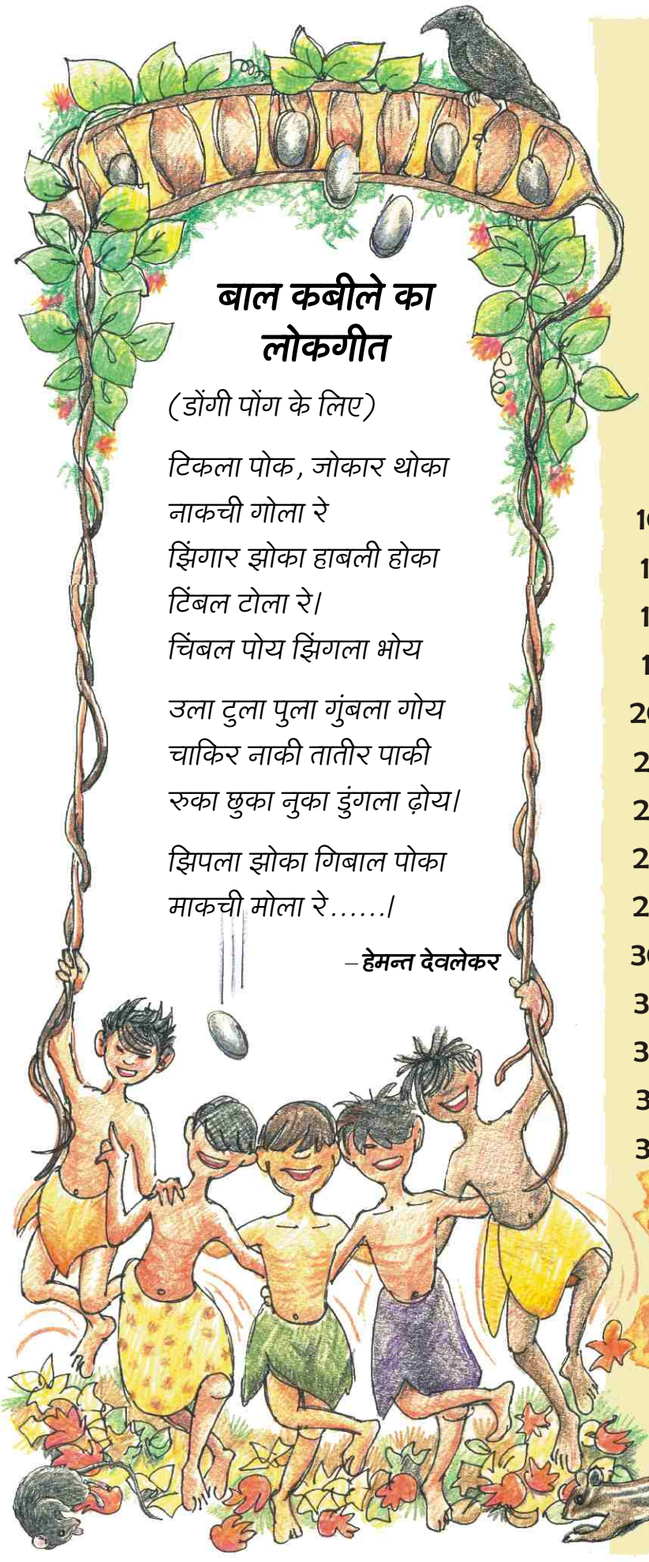

बाल कबीले का लोकगीत

(डोंगी पोंग के लिए)

टिकला पोक, जोकार थोका
नाकची गोला रे
झिंगार झोका हाबली होका
टिंबल टोला रे।
चिंबल पोय झिंगला भोय

उला टुला पुला गुंबला गोय
चाकिर नाकी तातीर पाकी
रुका छुका नुका डुंगला ढ़ोय।

झिपला झोका गिबाल पोका
माकची मोला रे......।

–हेमन्त देवलेकर

283 • मार्च 2010

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

2 बातूनी मूर्तिकार...
4 बिनिया की नदी
6 दुनिया के रंग हज़ार
7 जुगत
10 कहानियों के अण्डे
12 गोदना - मधुबनी का एक खास अन्दाज़
15 एक विचित्र मुठभेड़
17 मेरा पन्ना
20 बालकनी
22 माथापच्ची
24 गुठली आम का पेड़ है!
26 वो मनहूस दिन
29 तुम भी बनाओ
30 दो और दो चार क्यों?
34 अप
36 हाँ, वो गौरैया ही थी!
37 दो चिट्ठियाँ
38 लम्बी पूँछ वाला चूहा

इस अंक में

12
किसी भी गली में चले जाओ आपको घर-आँगन में बैठी महिलाएँ-लड़कियाँ गोदना बनाती दिख जाएँगी।

28
चावल काला भी हो सकता है। चीन की यह दुर्लभ किस्म बैंगनी-काली-सी होती है।

26
"पर मैं तो सिर्फ झाड़ू लगा रहा था। पत्तियाँ उड़ रही थीं।"

9

24
गुठली को गुरूजी लड़कों की लाइन में खड़े होने को कहते जब वो लड़कियों की लाइन में खड़ी होती थी।

38
वह अपनी लम्बी पूँछ को लेकर बड़ा खुश रहता। खुशी-खुशी उसे निहारता रहता।

29
इन्दु और चन्दु हमेशा कुछ नया करने की उधेड़बुन में लगे रहते।

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

: आवरण :
दिलीप चिंचालकर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
विजय झोपाटे

सहयोग
मिहिर
प्रभात
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रतिः 20.00
वार्षिकः 200.00 (व्यक्तिगत)
300.00 (संस्थागत)
तीन सालः 500.00 (व्यक्तिगत)
700.00 (संस्थागत)
आजीवनः 3000.00 (व्यक्तिगत)
4000.00 (संस्थागत)

सभी डाक खर्च हम देंगे।
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एस.आई.जी/.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर,
बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर
भोपाल, म.प्र. 462 016
फोन: (0755) 2671017, 2550976
फैक्स: (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in